

gen —, abhängig sein von, beruhen auf, in nächster Beziehung stehen zu: सर्वा ऽयं जनस्वामवलम्बते BHATT. 18, 41. व्यवहोरो ऽयं चारुदत्तमवलम्बते MRĪKH. 142, 17. सो ऽयं क इति बुद्धिस्तु साक्षात्पमवलम्बते BRĀSHĀP. 106. MÜLLER, SL. 197. — 9) zurückbleiben, nachbleiben: पृष्ठे ऽवलम्बितः GOLĀDHJ. GRAHĀNAV. 27. — 10) zögern, säumen R. GORR. 2, 121, 6. अवलम्बित H. 1478 fehlerhaft für अविल^०, wie die v. l. hat. — Vgl. अवलम्ब fgg. — caus. 1) herabhängen lassen, herablassen: दासीभिः पेडां रज्ज्वावलम्बिताम् KATHĀS. 64, 104. aufhängen: तं च कलशं नागदत्ते ऽवलम्ब्य PANĀT. 282, 10. वृत्तायसङ्गिना पाशेनात्मानमवलम्बयम् KATHĀS. 96, 16. — 2) ergreifen: कृत्स्नम् MĀLAY. 42, 6. — 3) stützen, halten, vor einem Fall bewahren: शक्यमिदानीं जीवितमवलम्बयितुम् (अवलम्बितुम् v. l.) MĀLAY. 31, 2. — 4) aufladen, aufbürden: सचिवावलम्बितधुरं नराधिपम् RAGH. 9, 69. — समव fassen, anfassen: बाहुभ्यामूह समवलम्बत MBH. 3, 10988. उत्स्तनीं समवलम्ब्य पा रतिः so v. a. in seine Arme schliessend VARĀH. BRH. S. 74, 18. fg. — आ 1) herabhängen, hängen: मुखावलम्बितहेमसूत्रं VIKR. 140. — 2) sich klammern —, sich hängen an, sich stützen auf: अशोकस्य विपुलां शाखामालम्ब्य R. 5, 26, 10. KATHĀS. 65, 203. fg. कृष्णभुजंगपुच्छम् Verz. d. Oxf. H. 128, b, 12. KATHĀS. 65, 189. PANĀT. 128, 19. पथदालम्बसे काम Spr. 3594. auch mit loc.: अलम्बस्व रोमसु halte dich an R. 5, 35, 23. — 3) ergreifen, fassen, packen: पाणिम् MBH. 9, 3540. अग्र्याणि शैलानां शिखराणि मरुत्तयपि R. 4, 8, 5. तं पाषाणमालम्ब्य KATHĀS. 45, 412. पाणिनावलम्ब्य भूपालम् RĀGA-TAR. 4, 433. केशान् 5, 432. अम्बु GHAT. 22. धनुः BHATT. 6, 35. मरुत्त्राणि 14, 95. so v. a. einnehmen, erobern: रावणपुरीमालम्बिष्यति R. 5, 72, 19. तस्य कविता मञ्चितमालम्बते so v. a. gefangen halten DHŪRTAS. 67, 4. — 4) halten, stützen: ता अलम्बमिष्टकामिष्टकामपदध्यात् KĀTH. 22, 8. R. 2, 103, 23 (111, 29 GORR.). अग्निदृष्टिपात्तमाधोरपालम्बितम् RAGH. 18, 38. पतितो किं नाम नालम्बसे SĀH. D. 116, 3. — 5) zu Etwas greifen, sich anlegen, an Etwas gehen, sich hingeben: काषायमालम्बिताम् zu einem rothen Gewande greifen so v. a. ein solches Gewand anlegen Spr. 3661. भूमिकामालम्ब्ये (so ist zu lesen) काम् RĀGA-TAR. 2, 112. तनू रोमाञ्चमालम्बते so v. a. die Haut am Körper fängt an zu rieseln Spr. 2083. रामस्य सदृशं व्यक्तं स्वरमालम्ब्य seine Stimme annehmend R. 3, 50, 22. 64, 5. 9. 66, 12. अलम्ब्यतामिति वरो (d. i. स्वयंवरो) यस्ते राजसु रोचते MĀRK. P. 124, 22. कुमुद्व्रतम् KATHĀS. 72, 287. चकोरव्रतम् 76, 11. अप्तयाशां सखीमिव । अलम्ब्य (eig. sich klammernd an) 34, 39. ध्यानम् sich hingeben MBH. 12, 6810. यथा यथा हि सदृत्तमालम्बतीतरे जनाः 10890. धैर्यमालम्ब्य 5, 7139. R. GORR. 2, 26, 25. KATHĀS. 37, 42. PANĀT. 21, 8. धीरत्वम् KATHĀS. 31, 85. धृतिम् 22, 100. हार्दं सौहृदम् R. 4, 4, 15. शौर्यम् 6, 16, 72. तदलं शोकमालम्ब्य क्रोधमालम्ब 5, 71, 11. क्रोधं च नालम्बसे WEBER, VĀGRAS. 255. सखमालम्ब्य R. 6, 99, 56. BHĀG. P. 8, 11, 18. औदास्यम् Spr. 1337. न कथंचिद्दृक् सैर्यमालम्बते PANĀT. 225, 23. सैर्यं मपालम्बितम् Spr. 1749. तद्वरं सत्यमालम्बितम् PANĀT. ed. OFN. 56, 16. अलम्बितप्रार्थनं VIKR. 38. तूष्णीमालम्बसे चेत् so v. a. wenn du dich dem Schweigen hingiebst (तूष्णीम् = निवृत्तिम्, निर्व्यापारत्वम् Comm.) PRAB. 98, 1. — 6) nach einer best. Weltgegend greifen so v. a. eine best. Richtung einschlagen: दक्षिणां दिश-

मालम्ब्य स प्रतस्थे KATHĀS. 23, 5. 75, 49. — 7) abhängen von, beruhen auf (acc.) SĀH. D. 63. — Vgl. अलम्ब u. s. w. — caus. sich anklammern lassen: अलम्बितकरं der die Hand angelegt hat VIKR. 125. — अग्र्या einholen, erreichen: अग्र्यं खलु भगवन्ते पुरुषाः सर्व एव जनेन प्रधावितास्तं दरिद्रपुरुषमध्यालम्ब्युः (अध्यालम्ब्युः?) SADDH. P. 4, 15, a. — अग्रा s. अपालम्ब. — व्या säumen, zögern MEGH. 46. — समा 1) sich klammern an: समालम्ब्ये धनम् MBH. 6, 4187. so v. a. zu Jmd halten RĀGA-TAR. 1, 283. sich stützen auf, sich verlassen auf: भवत्त्रेकम् KATHĀS. 18, 373. sich halten an so v. a. Rücksicht nehmen auf: नानाशास्त्रम् Verz. d. Oxf. H. 176, a, 34. — 2) ergreifen, fassen, packen KUMĀRAS. 5, 84. कन्यां काठे KATHĀS. 73, 211. — 3) zu Etwas greifen, sich hingeben: स्वरम् eine Stimme annehmen R. 3, 66, 26. तेजः तात्रम् R. GORR. 2, 20, 8. धैर्यम् 5, 16, 5. 7, 23, 4, 18. विश्वासम् MRĪKH. 55, 19. विनयम् Spr. 3168. सारुसम् 4443. समालम्ब्ये (pass.) रिपुमित्रकल्पैः पक्षैः प्रकासः कुमुदेर्विषादः BHATT. 11, 1. — 4) theilhaftig werden: जनपदैः लक्ष्मीः समालम्ब्यताम् Spr. 4721. v. l. जनपदै लक्ष्मीः समालम्बताम् sich niederlassen auf. — caus. hängen (trans.) an: तं धनुषि समालम्ब्य PANĀT. 144, 23. — उद् हängen, उल्लम्बित hängend: पादेनैकेन गगणो द्वितीयेन च भूतले । तिष्ठाम्युल्लम्बितः MRĪKH. 33, 20. — caus. aufhängen, aufknüpfen: राजद्वारि स चीरिकाम् — उदलम्बयत् KATHĀS. 51, 130. 55, 37. 42. 71, 81. उल्लम्ब्य तौ तिप्रं वधकैरवशो कृतः 64, 53. 25, 181. 75, 48. 77, 64. — समुद् हängen: समुल्लम्बित hängend MRĪKH. 34, 2. — परि zurückbleiben, sich langsamer bewegen SŪRJAS. 3, 9. verbleiben an einem Orte: सकृत्कृतापराधस्य तत्रैव विलम्बतः MBH. 12, 5157. ausbleiben, nicht kommen: सप्तमे वसवः प्राप्ताः स एक परिलम्बते HARIV. 3008. — परिलम्ब्य Gtr. 11, 25 fehlerhaft für परिर्भ्य umarmend, wie die v. l. hat. — प्र herabhängen SUCR. 1, 289, 3. प्रलम्बित herabhängend KATHĀS. 62, 145. — Vgl. प्रलम्ब fgg. — अग्रिप्र, partic. ० लम्बित herabhängend SADDH. P. 4, 12, a. — प्रति caus. aufhängen, aufknüpfen PANĀT. 98, 4, v. l. — वि 1) auf beiden Seiten hängen an (acc.): वीव वा अत्रराताम पती लम्बते PANĀV. BR. 14, 9, 20. herabhängen, hängen an (loc.): धमत्सु युधि नागेषु मनुष्या विलम्बिरे MBH. 7, 3204. 4595. R. 5, 55, 22. 61, 2. PANĀT. 3, 5, 11. विलम्बत्यः (लताः) HARIV. 12013. विलम्बित herabhängend 4731. स्तनात्तरं RAGH. 10, 63. — 2) sich senken, sich neigen: दिवाकारे विलम्बमाने ऽस्तमुपेत्य पर्वतम् MBH. 7, 1969. — 3) hängen bleiben so v. a. langsam von der Stelle kommen, längere Zeit verweilen bei, säumen, zögern MBH. 8, 4158. fg. एकैकस्मिन्नाशौ त्रिंशत्त्रिंशन्मासांस्विलम्बमानः BHĀG. P. 5, 22, 16. एकेन सकलत्रेणा तेमं नेरु विलम्बितुम् R. 3, 1, 31. 2, 19, 11. किमर्थं त्वं विलम्बसे was zögerst du? 1, 75, 16. 4, 5, 11. R. SCHL. 2, 77, 22. KĀM. NITIS. 12, 20. KUMĀRAS. 7, 13. इति यावत्स नृपतिर्विचिकितस्विलम्बते KATHĀS. 45, 103. न विलम्बेत शौचार्थम् MĀRK. P. 34, 112. नायं कालो विलम्बितुम् MBH. 3, 2823. R. 5, 95, 6. मा विलम्बस्व 7, 23, 4, 55. MĀRK. P. 15, 67. मा विलम्बत HARIV. 15605. MĀRK. P. 18, 34. मा विलम्ब PANĀT. 107, 25 fehlerhaft für माविलम्बम्. किमर्थं हि वि-